International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(6): 40-43

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(6): 40-43
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-10-2023
Accepted: 11-11-2023

अपूर्बा हलदर
पीएच.डी. शोधछात्र, संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

डॉ. सपना चन्देल
शोध–निर्देशक, संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अपूर्बा हलदर
पीएच.डी. शोधछात्र, संस्कृत–विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

सुश्रुतसंहिता में ज्वर रोगः निदान एवं चिकित्सा

अपूर्बा हलदर, डॉ. सपना चन्देल

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2023.v9.i6a.2240

प्रस्तावना

वैदिक साहित्य में आयुर्वेद को उपवेद के रूप में स्वीकार किया गया है। कुछ विद्वान इसे ऋग्वेद तथा अथर्ववेद का उपवेद मानते हैं।[1] वेदों में रोगों के दो भेद माने गए हैं शारीरिक और आगन्तुक। शारीरिक रोगों के लिए रोग और अमीवा शब्द है तथा आगन्तुक रोगों के लिए रक्षस् और यातुधान शब्द हैं।[2] ऋग्वेद में अमीवा और रक्षस् दोनों भेदों का उल्लेख मिलता है।[3] अथर्ववेद में कहा गया है कि अधिक विषयासक्ति और दुर्भावनादि के कारण रोग उत्पन्न होता है।[4] रामायण में तीन प्रकार रोगों के बारे में बताया गया है कि जो अत्यन्त भयंकर हैं और वे वात, पित्त एवं कफ के प्रकोप से उत्पन्न होते हैं।[5] इसलिए महाभारत में शारीरिक रोग के साथ मानसिक रोग को भी स्वीकार किया है।[6]

ज्वर शब्द √ज्वर् धातु से घञ् प्रत्यय युक्त होकर निष्पन्न होता है। इसका अर्थ बुखार, ताप आदि है।[7] अथर्ववेद के अनुसार प्राण ही मृत्यु और प्राण ही ज्वर है।[8] यह ज्वर (तक्मन्) का जनक वरूण देव है अर्थात् ज्वर की उत्प जलाधिपति वरूण देव से हुए है।[9] चरक के मत में शारीरिक रोगों में ज्वर प्रधान है।[10] जो शरीर इन्द्रिय और मन में ताप उत्पन्न करता है। बुद्धि, वल, वर्ण, हर्ष और उत्साह को कम करता है एवं श्रम, क्लम, मोह, आहार में अरूचि आदि उत्पन्न करता है, वह ज्वर है।[11] अष्टांगहृदय में ज्वर को विविध प्रकार के नाम से जाना जाता हैं। यथा–रोगपति, पाप्मा, मृत्यु, ओजोशन, अन्तक आदि।[12] गरूड़महापुराण में भी यह विविध नाम से जीव शरीर को धारण करते हैं। यथा हस्ति शरीर में पाकल नाम से, घोड़े की देह में अभिताप, कुत्ते के शरीर में अलर्क, मेघ में इन्द्रमद, जल में नीलिका, औषधियों मे ज्योति और भूमि में ऊपर नाम से प्रसिद्ध हैं।[13] अग्निपुराण में भी बताया गया है कि ज्वर, कुष्ठादि एक शारीरिक व्याधि है।[14] श्रीहरिवंशपुराण में भगवान् श्री कृष्ण ने ज्वर को वरदान देने के समय कहा था कि हे ज्वर! तुम स्थावर जंगमात्मक सभी प्रकार के प्राणियों में निवास करोगे।[15] ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार यह शिवभक्त, योगी, निष्ठुर तथा विकृत आकार धारण करने वाली व्याधि है। देखने में भयानक और इसके तीन पैर, तीन मस्तक, छः हाथ, नौ नैत्र हैं। यह भस्मप्रहरण ज्वर अतिरोद्र एवं कालान्तक यम के समान है।[16] अतः ज्वर सभी प्रकार के प्राणी के लिए दुःखदायक हैं।[17] शारीरिक ज्वर के अतिरिक्त काम ज्वर भी है जो रामायण में देखने को मिलता है।[18] अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में काम ज्वर के बारे में सखी अनसूया शकुन्तला को कहा है कि हे सखि! तुम्हारा सन्ताप अर्थात् ज्वर का कारण क्या है? क्योंकि रोग को ठीक–ठीक जाने बिना उसकी चिकित्सा प्रारम्भ नहीं की जा सकती है।[19] बाणभट्ट ने हर्षचरित में दाहज्वर को महान बताया है।[20] सुश्रुतसंहिता के अनुसार ज्वर जन्म से लेकर मृत्युकाल तक सभी प्राणीयों में दिखाई देता हैं, इसलिए यह सब रोगों का रजा है।[21]

देवता और मनुष्यों के बिना कोई भी प्राणी इसको सहन नहीं कर पाते है।[22] प्रावृड, शरद, वसन्त आदि ऋतु अथवा दिन–रात के अपने–अपने समय में अपने प्रकोप के कारणों से प्रकुपित हुए दोष सम्पूर्ण शरीर में फैल कर ही ज्वर को उत्पन्न करते हैं।[23] इस ज्वर में थकान, बेचैनी, विवर्णता, विरसता, नेत्र में अश्रु, शीत–वायु–धूप आदि में बारंबार कभी इच्छा और कभी द्वेष होना, जम्भाई, अंगों का टूटना, भारीपन, रोमहर्ष, अरूचि, मन में तमोभाव का आर्विभाव, आनन्द का अभाव, शीत की प्रतीति होना ये सब लक्षण पूर्वरूप में दिखाई देते हैं।[24] एतदतिरिक्त विशेष करके वात में जम्भाई आना, पित्त से नयन में दाह होना, कफ से अन्न में अरूचि होना और तीनों दोषों का प्रकोप होने पर तीनों दोषों के लक्षण मिले रहते हैं।[25]

विविध प्रकार के ज्वर का लक्षण

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार वात, पित्त और कफ इन तीनों ही विविध प्रकार के ज्वरों का जन्मदाता है।[26] सुश्रुतसंहिता में ज्वर के आठ प्रकार के भेद स्वीकार किये हैं। यथा वातादि पृथक दोषों से तीन अर्थात् वातज्वर, पित्तज्वर और कफज्वर, सन्निपातज्वर, तीन द्वन्द्वजज्वर (जैसे–वातपैत्तिक, वातश्लेष्मिक और पित्तश्लेष्मिक) एवं आगन्तुजज्वर।[27]

वातज्वरः चरकसंहिता के अनुसार विषमारम्भ–विसर्गी का होना, ताप का घटते और बढ़ते रहना, ज्वर का कभी तीव्र होना, कभी हल्का होना इत्यादि ये सब वातज्वर के लक्षण हैं।[28] सुश्रुतसंहिता में कहा गया है कि वातिकज्वर में शरीर में कम्पन, ज्वर का वेग अनियमित, कण्ठ तथा औष्ठ का सूखना, अनिद्रा, छींक का रूकना, शरीर में रूक्षता आदि होते हैं।[29]

पित्तज्वरः अष्टांगहृदय के अनुसार इस ज्वर में नासा का पाक, शीत की चाह भ्रम अर्थात् चक्कर आना, मद आदि प्रकटित होते हैं।[30] सुश्रुतसंहिता में बताया गया है कि पित्तज्वर में ज्वर का वेग तीव्र रहता है, अतीसार, अल्पनिद्रा, पित्तमिश्रित वमन, कण्ठ–औष्ठ–मुख और नासा का पाकना, पसीना आना इत्यादि होते हैं।[31]

कफज्वरः भावप्रकाश के अनुसार इस ज्वर में सभी अङ्गों का गीले वस्त्रों से लिपटे हुए के समान प्रतीत होता है, ज्वर का मन्दवेग, शरीर में आलस्य, मुख में मीठापन आदि रहते हैं।[32] सुश्रुतसंहिता में बतलाया गया है कि कफज्वर में शरीर का भारीपन, ठंड लगना, जी मचलना, रोमहर्ष, अधिक निद्रा, प्राणादि स्रतों का अवरोध, शरीर में मन्दवेदना, मुख से थूक आना, मुख में मधुरता आदि रहते हैं।[33]

सन्निपातज्वरः अष्टांगहृदय के अनुसार सन्निपातज्वर में आँखों में अस्थिरता, पिण्डलियों, पार्श्वों, शिर, पर्वों तथा अस्थियों में दर्द, भ्रम आदि रहते है।[34] सुश्रुतसंहिता में उल्लिखित है कि इस ज्वर में निद्रानाश, शिरोभ्रम, श्वास की अधिकता, तन्द्रा, अंगों की सुप्तता, अरूचि, प्यास आदि होते हैं।[35]

वातपैत्तिकज्वरः अष्टांगहृदय के अनुसार वातपैत्तिकज्वर में मस्तक वेदना मूर्च्छा, वमन, दाह, मोह, मुख और गले में शोष, बेचैनी, पैरों में दर्द आदि दिखाई देते हैं।[36] सुश्रुतसंहितानुसार प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्रानाश, शिर में वेदना आदि ये वातपित्तज्वर के लक्षण हैं।[37]

वातकफज्वरः योगतरंगिणी में वातकफज्वर के लक्षण में कहा गया है कि मस्तकपीड़ा, वदन–चक्षु और नासिका से पानी गिरना, खाँसी पसीने का न आना इत्यादि ये सब लक्षण वातकफज्वर के हैं।[38] सुश्रुतसंहिता के अनुसार देह का गीलापन सन्धियों में पीड़ा, अधिकनिद्रा और देह भारी वातकफज्वर के लक्षण हैं।[39]

कफपित्तज्वरः योगतरंगिणी के अनुसार कफ से मुख ल्हिसा और तिक्त होना, तन्द्रा, मोह, खाँसी, अरूचि, प्यास आदि कफपित्तज्वर का लक्षण हैं।[40]

आगन्तुजज्वर : सुश्रुतसंहितानुसार विद्रधि आदि रोगों के हेतु, विदाह से, आगन्तुज कारणों और अन्य दूसरे कारणों से दूसरे प्रकार का ज्वर होता है। इस प्रकार ज्वर कभी भी वातादि दोषों के लक्षणों का अतिक्रम नहीं करता अर्थात् आगन्तुज या अन्य ज्वर भी वातादि दोषों के लक्षणों वाला ही होता है।[41]

विविध प्रकार के ज्वर का चिकित्सा

अथर्ववेद के अनुसार अग्नि, सोम, ग्रावा, वरूण, पुतदक्षा यज्ञ वेदी, कुश, प्रज्वलित समिधाएँ ये सब ज्वर को दूर करती हैं।[42] कौशिकगृह्यसूत्र में बताया गया है कि अथर्ववेदयी 'अग्निस्तक्मानम्' इस सूक्त से कालेधान के लावा का मण्ड बनाकर ज्वर रोगी को पिलावे।[43] चरकसंहिता में वर्णित है कि वात और कफ ज्वरों में प्यास लगने पर उष्ण जल देना चाहिए।[44] क्योंकि काश्यपसंहिता में बताया गया है कि गरम जल पीने से दोषों का पाक होता है और जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है। इसके साथ ज्वर की उष्णता भी कम हो जाती है।[45] भेलसंहिता में ज्वरचिकित्सा के ग्यारह उपक्रम बतलाया गया है। यथा स्वेदकर्म, कषाय, लेह, पाचन, पूर्ण, प्रदेह, सेक, वटिका, मोदक, दुग्ध और सर्पि।[46] शाङ्र्गधरसंहिता के अनुसार सोंठ, देवदारू, धनिया, छोटी–बड़ी दोनों कण्टकारी इन पाँच औषधियों के काढ़ा तैयार करके रोगी को पिलाने से ज्वर दूर हो जाता है।[47] भैषज्यरत्नावली में बताया गया है कि सैंधनमक, काली मिर्च, कुठ, खादिर, हल्दी आदि के चूर्ण का गोली सभी प्रकार के ज्वरों को नाश करता हैं।[48]

योग ग्रन्थ घेरण्ड–संहिता के अनुसार वासोधौति के अभ्यास से गुल्म, ज्वर, प्लीहा, कुष्ठादि का शमन होता हैं।[49] हठप्रदीपिका में वर्णित है कि शीतली नामक के कुम्भक से ज्वर, पित्त, भुख, प्यास आदि सभी प्रकार के रोग का नष्ट होता है।[50] शिवसंहिता में भगवान् शिव ने कहा है कि यदि जिह्वा को तालुमूल में स्थित करके प्राणवायु का पान करे तो साधक के सभी रोगों का नाश हो जाता है।[51] सुश्रुतसंहिता के अनुसार बुद्धिमान वैद्य रोगी को स्वच्छ घृत का पान करावे, क्योंकि इससे रोगी को सुख मिलता है। यह घृतपान विधि वात के द्वारा उत्पन्न होने वाले ज्वरों को पर्वरूपों में श्रेष्ठ है। पित्तजन्य ज्वरों के पूर्वरूपों में विरेचन कर्म और कफजन्य ज्वरों के पूर्वरूपों में वमन कर्म कराना चाहिए।[52]

वातज्वरः चरकसंहिता के अनुसार वात और पित्त ज्वर में परिपक्क दोष को नाश करने के लिए घृत का पान करवाना जरूरी है।[53] सुश्रुतसंहिता में बतलाया गया है कि पिप्पली, सारिवा, द्राक्षा, सौफ, हरेणु इनके कषाय में गुढ़ मिलाकर सेवन करने से वातज्वर नष्ट हो जाता है।[54]

पित्तज्वरः अष्टांगहृदय के अनुसार इस ज्वर में इन्द्रजौ, मोथा, कुटकी, मुस्ता, पित्तपापड़ा का काढ़ा रोगी को पिलाना चाहिए।[55] सुश्रुतसंहितानुसार श्रीपर्णी, चन्दन, खस, फालसा, महुआ इनके कषाय को शर्करा मिलाकर पीने से पैत्तिकज्वर नाश हो जाता है।[56]

कफज्वरः भावप्रकाश के अनुसार पीपल, पिपरामूल, मरिच आदि का क्वाथ कफज्वर को शान्त करता है।[57] सुश्रुतसंहिता के मतानुसार त्रिकटु, नागकेशर, हरिद्रा आदि चूर्ण सेवन करने से कफज्वर दूर होता है।[58]

सन्निपातज्वरः अष्टांगहृदय में कहा गया है कि सन्निपातज्वर में परवल के पत्ते, नीम की छाल, त्रिफला आदि का काढ़ा सेवन करना चाहिए।[59] सुश्रुतसंहिता के अनुसार इस ज्वर चिकित्सा में हल्दी, नागरमोथा, त्रिफला आदि का क्वाथ जरूरी है।[60]

वातपैत्तिकज्वरः सुश्रुतसंहिता के अनुसार चिरायता, नीमगिलोय, द्रक्षा, आंवला और कचूर इनके क्वाथ में गुढ़ मिलाकर पीने से वातपित्तज्वर नष्ट होता है।[61]

वातकफज्वरः इस ज्वर में सोंठ, धनियाँ, भारङ्गी, हरड़, देवदारू, वच आदि का क्वाथ करके इसमें मधु और हींगचूर्ण मिलाकर पिलाने से विशेष उपकार मिलता है।[62]

कफपित्तज्वरः कुटकी, हरड़, मुनक्का, नागरमोथा और पित्तपापड़ा इनका क्वाथ मधु के साथ पिने से कफपित्तज्वर का पतन होता है।[63]

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि ज्वर रोग एवं उससे उत्पन्न व्याधियाँ प्राण घातक होती हैं। आयुर्वेदिय ग्रन्थों एवं सुश्रुतसंहिता में

इसका उपचार एवं निवारण वर्णित है, जिससे मानव निजात पा सकता है और सुदृढ़ एवं निरोग शरीर पा सकता है।

सन्दर्भ

1. डॉ. सुरेन्द्र कुमार, ऋग्वेद में विविध विधाएँ, पृ. 101
2. डा. कपिल देव द्विवेदी, वेदों में आयुर्वेद, प. 38
3. अपामीवा भवतु रक्षसा सह, ऋग्वेद 9/85/1
4. यदि कामाद् अपकामाद् धृदयाज् जायते परि। अथर्ववेद 9/8/8
5. इवात्युग्रास्त्रयो घोरा इवामयाः। वाल्मिकी रामायण, उत्तरकाण्ड 5/7
6. द्विविधो जायते व्याधि : शारीरो मानसस्थता। महाभारत, शान्तिपर्व (राजधर्मानुशासन) 16/8
7. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश (प्रथम भाग), प. 402
8. प्राणों मृत्युः प्राणस् तक्मा। अथर्ववेद 11/4/11
9. राज्ञो वरूणस्यासि पुत्रः। अथर्ववेद 1/25/3
10. तत्प्रथमत्वात्त्छरीराणाम्। चरकसंहिता (प्रथम भाग), निदानस्थान 1/16
11. देहेन्द्रियमनस्तापकरः प्रज्ञाबलवर्णहर्षोत्साहह्रासकरः, श्रमल्कममोहाहारोपरोधसंजननः। वही 1/35
12. ज्वरोरोगपतिः पाप्मा मृत्युरोजोऽशनोऽन्तकः।। अष्टांगहृदय, निदानस्थान 2/1
13. पाकलो गजेष्वभितापो वाजिष्वलर्कः कुक्कुरेषु। इन्द्रमदो जलदेष्वप्सु नीलिका ज्योतिरोषधीषु भुम्यामूषरो नाम।। गरूड़महापुराणम्, पूर्वखण्डम् 147/3
14. शारीरा ज्वरकुष्ठाद्याः। अग्निपुराण 280/1
15. सर्वजातिषु विश्रब्धं यथा स्थावरजङ्गमे। श्रीहरिवंशपुराण, द्वितीय विष्णु पर्व 126/20
16. शिवभक्तश्च योगी च निष्ठुरो विकृताकृतिः। भीमस्त्रिपादस्त्रिशिराः षड्भुजो नवलोचनः। भस्मप्रहरणो रोद्रः कालान्तकयमोपमः।। ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (प्रथमभाग), ब्रह्मखण्डम् 16/27, 28
17. प्राणिना दुःखदायकाः। वही 16/29
18. ममायमात्मप्रभवो भूयस्त्वमुप यास्यति। रामायण, किष्किन्धाकाण्ड 1/34
19. कथय किंनिमित्तं ते सन्तापः। विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भः प्रतीकारस्य। अभिज्ञानशाकुन्तल 3/9
20. देव! दाहज्वरो महान् इति। हर्षचरित, पञ्चम उच्छास, पृ. 260
21. जन्मादौ निधने चैव प्रायो विशति देहिनम्। अतः सर्वविकाराणामयं राजा प्रकीर्तित।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/10
22. ऋते देवमनुष्येभ्यो नान्यो विषहते तुतम्। वही 39/11
23. दोषाः प्रकुपिताः स्वेषु कालेषु स्वैः प्रकोपणैः। व्याप्य देहमशेषेण ज्वरमापादयन्ति हि। वही 39/15, 16
24. श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः। इच्छाद्वेषौ मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु।। जृम्भाऽङ्गमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरूचिस्तमः। अप्रहर्षश्च शीतं च भवत्युत्पत्स्यति ज्वरे।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/25, 26
25. सामात्यतो विशेषत्तु जृम्भाऽत्पर्थ समीरणात्। पित्तान्नयनयोदहिः कफान्नान्नाभिनन्दनम्। सर्वलिङ्गसमवायः सर्वदोषप्रकोपजे। वही 39/27, 28
26. पित्तश्लेष्मसमीराश्च ज्वरस्य जनकास्त्रयः। ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (प्रथम भाग), ब्रह्मखण्ड 16/56
27. दोषौः पृथक समस्तैश्च द्वन्द्वैरागन्तुरेव च। अनेककारणोत्पन्नः स्मृतस्त्वष्टविधो ज्वरः।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/14
28. विषमारम्भविसर्गित्वम्, ऊष्माणो वैषम्यं, तीव्रतनुभावानवस्थानानि ज्वरस्य। चरकसंहिता (प्रथम भाग), निदानस्थान 1/21
29. वेपथुर्विषमो वेगः कण्ठौष्ठपरिशेषणम्। निद्रानाशः क्षुतः स्तम्भो गात्राणां रौक्ष्यमेव च।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/29
30. नासास्यपाकः शीतेच्छा भ्रमो मूर्च्छा मदोऽरतिः। अष्टांगहृदय, निदानस्थान 2/19
31. वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्रात्पत्वं तथा वमिः। कण्ठौष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/31
32. स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यता।। भावप्रकाश (द्वितीय भाग), चिकित्साप्रकरणम्, ज्वराधिकार 371
33. गौरवं शीतमुत्क्लेशो रोमहर्षोऽतिनिद्रता। स्त्रोतोरोधो रूगल्पत्वं प्रसेको मधुरास्यता।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/33
34. अक्षिणी पिण्डिकापार्श्वमूर्द्धपर्वास्थिरूग्भ्रमः।। अष्टांगहृदय, निदानस्थान 2/29
35. निद्रानाशो भ्रमः श्वासस्तन्द्रा सुप्ताङ्गताऽरूचिः। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/35
36. शिरोर्तिमुर्च्छावमिदाहमोहकण्ठास्यशोषारतिपर्वभेदाः। अष्टांगहृदय, निदानस्थान 2/24
37. तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहः स्वप्ननाशाः शिरोरूजा। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/47
38. शिरोग्रहः प्रतिश्यायः कासः स्वेदाप्रवर्तनम्। योगतरंगिणी (भाग–1) 20/24
39. स्तैमित्यं पर्वणां भेदो निद्रा गौरवमेव च। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/48
40. लिप्ततिक्तास्यता तंद्रा मोहः कासोऽरूचिस्तृषा। योगतरंगिणी (भाग–1) 20/25
41. रोगाणां तु समुत्थानाद्विदाहागन्तुतस्तथा। ज्वरोऽपरः संभवति तेस्तैरन्यैश्च हेतुभिः। दोषाणां स तु लिङ्गानि कदाचिन्नातिवर्तते।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/81, 82
42. अग्निस् तक्मानम् अप वधताम् इतः सोमो ग्रावा वरूणः पूतदक्षाः। वेदिर् वर्हिः समिधः शोशुचाना अप देषांस्यमुया भवन्तु।। अथर्ववेद 5/22/1
43. अग्निस्तक्मानमिति लाजान् पाययति। कौशिकगृह्यसूत्र, चतुर्थ अध्याय 29/18
44. तृष्यते सलिलं चोष्णं दद्याद्वातकफज्वरे। चरकसंहिता (द्वितीय भाग), चिकित्सास्थान 3/143
45. तेनास्य दोषा पचन्ते कायाग्निश्चाभिदीप्यते। ज्वरोष्मा मार्दवं याति। काश्यपसंहिता, खिलस्थानम् 1/73, 74
46. सिद्धास्स्वेदाः कषायाश्च लेहः पाचनकानि च। चूर्णः प्रदेहास्सेकाश्च वटिका मोदकाः पयः। सर्पिश्चैकादशम्। भेलसंहिता, चिकित्सास्थान 1/14, 15, 16
47. नागरं देवकाष्ठं च धान्याकं वृहतीद्वयम्। शाङ्गर्धरसंहिता, मध्यमखण्ड 2/9
48. सैन्धवं मरिचं कुष्ठं खादिरं द्विहरिद्रकम्। भैषज्यरत्नावली, ज्वराधिकार, 797
49. गुल्म ज्वरप्लीहा कुष्टम्। घेरण्ड–संहिता, प्रथमोपदेश 41
50. ज्वरं पित्तं क्षुधां तृषाम्। हठप्रदीपिका, द्वितीय उपदेश 58
51. रसनां तालुमूले यः स्थापयित्वा विचक्षणः। पिबेत् प्राणलिलं तस्य रोगाणां सक्षयो भवेत्।। शिवसंहिता, तृतीय पटल 84
52. ज्वरस्य पूर्वरूपेषु वर्तमानेषु बुद्धिमान्। पाययेत घृतं स्वच्छं ततः सलभते सुखम्।। विधिर्मारूतजेष्वेष पैत्तिकेषु विरेचनम्। मृदु प्रच्छर्दनं तद्वतकफजेषु विधियते।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/97, 98
53. वातपित्तोत्तरे ज्वरे। परिपक्केषु दोषेषु सर्पिष्पानम्। चरकसंहिता (द्वितीय भाग), चिकित्सास्थान 3/164, 165
54. पिप्पलीसारिवाद्राक्षाशतपुष्पाहरेणुभि।

कृतः कषायः सगुड़ो हन्याच्छ्वसनजं ज्वरम्। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/169
55. पित्त शक्रयवा धनम्।
कटुका चेति सक्षौद्रं मुस्ता पर्पटकं तथा। अष्टांगहृदय, चिकित्सास्थान 1/52, 53
56. श्रीपर्णीचन्दनोशीरपरूषकमधूकजः।
शर्करामधुरो हन्ति कषायः पैत्तिकं ज्वरम्।। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/175
57. पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचम्। भावप्रकाश (द्वितीय भाग), चिकित्सास्थान, ज्वराधिकार 374
58. कटुत्रिकं नागपुष्पं हरिद्रा। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/187
59. पटोलपत्रनिम्बत्वक्त्रिफला। अष्टांगहृदय, चिकित्सास्थान 1/66
60. हरिद्रा भद्रमुस्तं च त्रिफला। सुश्रुतसंहिता, उत्तरतन्त्र 39/199
61. किराततिक्तममृतां द्राक्षामामलकं शटीम्। वही 39/199
62. नागरं धान्यकं भाङ्गीमभयां सुरदारू च।
वचां पर्पटकं मुस्तं भुतीकमथ कटफलम्।।
निष्क्वाथ्य कफवातोत्थे क्षौद्रहिंगुसमन्वितम्। वही 39/193, 194
कटुकाविजयाद्राक्षामुस्तपर्पटकैः कृतः।
63. कषायो नाशयेत्पीतः श्लेष्मपित्तभवं ज्वरम्। वही 39/196